पक्ष या विपक्ष नहीं वल्कि निष्पक्ष !

आज उस विरासत की जिसकी करिश्मा आज तक बिहार की सिहासत में चलता है - सामाजिक न्याय की सिपाही की !

समाजवाद के सेनानी की और उनकी जमीं पर आज लालू और नितीश कुमार की शख्सियत चमक रही है ।वो बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री का करिश्मा ही था कि देश ने उन्हे जननायक कहा ।आजादी के पहले और आजादी के बाद भी बिहार की सिहासत में एक से बढकर एक सुरमा हुए ।किसी भी तरह का आंदोलन में बढ चढ कर भागीदारी निभाई । नतीजा ,एक से बढकर एक सितारे फलक में सामने आये ,लेकिन बिहार के राजनीतिक आसमान में सबसे ज्यादा चमकने वाले सितारे का नाम था- कर्पूरी ठाकुर । कर्पूरी ठाकुर जैसे साधारण पृष्ठभूमि के सख्सियत का सत्ता के शीर्ष पर पहूँचना अपने आप में एक बडी घटना थी ।

तारीख 22 दिसम्बर 1970 , वैसे तो ये तारीख सदियों के काम सुबह लेकिन इस दिन पटना में जो होने वाला था वह ऐतिहासिक केवल बिहार के लिए नही वल्कि पुरे देश के लिए । देश के सियासत का ऐतिहासिक बिहार के सिहासत में 22 दिसम्बर 1970 को वो होने जा रहा था जिसके लिए सदियों से संघर्ष किया जा रहा था । शोषित और वंचित समाज को राजकुल का नेतृत्व मिल रहा था ।

सदियों का संघर्ष हुआ साकार ।आजादी के आंदोलन में स्वाधीनता के सेनानियों ने जो सपना देखा था वो साकार समाज बनाने के लिए संकल्प लिया गया था । सामाजिक न्याय के जो ताने -बाने बुने गये थे वो प्राचीन मगध साम्राज्य सम्राट अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र में साकार हुआ था ।

साकार होने लगा था समतामूलक समाज का सपना । भारतीय लोकतंत्र में ये दिन हमेशा के लिए याद रखा जायेगा । एक नाई के परिवार में जन्में अति-पिछडे जाति के घर पैदा हुए एक गरीब परिवार के बेटे ने समस्तीपुर के एक छोटे से गाँव से सत्ता के शीर्ष का सफर तय किया था ।समस्तीपुर से सत्ता के शीर्ष का सफर 22 दिसम्बर 1970 का वो तारीख जो कर्पूरी ठाकुर ने पहली बार मंत्री पद की शपथ लिया ।आजाद भारत में पहले अति पिछडा मुख्यमंत्री होने का गौरव हासिल है ।

देश के पहले अति -पिछडी जाति के मुख्यमंत्री थे - कर्पूरी ठाकुर

कर्पूरी ठाकुर को मुख्यमंत्री बनना देश के सिहासत के अहम घटना क्रम माना जाता है । कर्पुरी ठाकुर के फैसलों ने यह शाबित कर दिया । उन्हे क्यों कहा जाता था जननायक कर्पूरी ठाकुर ।

जननायक कर्पूरी ठाकुर अपनी जिन्दगी अभाव एवं अशिक्षा में शुरु की थी ,लेकिन मुश्किलों के आगे वे घबराये नहीं । कर्पूरी ने कभी हार न मानी । संघर्षो का नतीजा यह हुआ कि कर्पूरी ठाकुर वो तो कामयाबी के सीढी चढे ही करोडो शोषितों और पिछडों के लिए राह भी बना दी । उन्होने आजीवन गाँधी के आखरी आदमी के लिए काम किया ।उनकी जिन्दगी करोडो लोगों के लिए मिशाल है ।

कर्पूरी ठाकुर देश के उस वर्ग के लिए प्रतिनिधित्व करते थे जो सालों से उनके प्रतिनिधित्व का इंतजार था । नाई बिरादरी से आने वाले कर्पूरी ठाकुर का जन्म 24 जनवरी 1924 को समस्तीपुर जिले के पितौंधिया गाँव में हुआ था ।

कर्पूरी ठाकुर का जन्म गुलाम भारत में उस वक्त हुआ जब भारत का इतिहास करवट बदल रहा था । उन्हे विरासत में अभाव ,अशिक्षा और गरीबी दो जून की रोटी के लिए संघर्ष करना पडता था । वे गोकुल ठाकुर के पहली संतान थे और माता का नाम था रामदुलारी देवी ।

कर्पूरी ठाकुर का बचपन संघर्ष में बीता ।उनकी शादी कम उम्र में बीता ।मुज्जफरपुर के चंदनपट्टी के फूलेश्वरी देवी से कर दिया गया । लेकिन कर्पूरी ठाकुर ने साफ-साफ कह दिया वे गुलाम भारत में गुलाम संतान पैदा नहीं करेंगें ।

छात्रों की सभा को संवोधित करते हुए

" हमारे देश की आबादी इतनी अधिक है कि केवल थूक फेंकने देने से अंग्रेजी राज वह जाएगा - कर्पूरी ठाकुर "

इस ओजस्वी एवं जोशीले भाषण के कारण युवा कर्पूरी ठाकुर ने ब्रिटिश हुकुमत को चुनौती दी । जाहीर सी बात थी अंग्रेजी सरकार की भौंहें तन ग ई और कर्पूरी ठाकुर को कोर्ट में पेश किया गया । कर्पूरी को एक दिन का जेल और 50 रुपये जुरमाने की सजा सुनाई ग ई ।इस तरह कर्पूरी ठाकुर ने आजादी के आंदोलन में दस्तक दी और कर्पूरी ठाकुर ने गाँधी जी के रामगढ 1942 के आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई । कर्पूरी आजाद दस्ते में शामिल हुए और परिवार की आर्थिक कठिनाईयों को देखते हुए शिक्षक की नौकरी भी कर ली , वे मीडिल स्कूल के हेड मास्टर बने और आजाद दस्ते का कामकाज भी करते रहे , लेकिन पुलिस की निगाहें भी कर्पूरी ठाकुर पर लगी रहीं ।अक्टूबर 1942 में 2बजे रात में पितौंझिया स्कूल में सोते हुए कर्पूरी ठाकुर को गिरफ्तार कर लिया । कर्पूरी ठाकुर को दरभंगा जेल भेज दिया ।फिर वे भागलपुर की जेल में शिफ्ट हुए । कैदियों के लिए कर्पूरी ने जेल में 28 दिन तक भूख हडताल किया । जेल प्रशासन वे सभी माँगे मानते हुए इनका अनशन तोडवाया

नवम्बर 1945 में जेल से रिहा हुए । 1947 में पंडित रामनन्दन मिश्र के अगुआई में भारतीय किसान पंचायत का गठन किया गया ।इसमें कर्पूरी ठाकुर को पंचायत सचिव ,बाद में प्रधान

सचिव बनाया गया । फिर वो पल आया जो सबको इतंजार था । 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया ,फिर संविधान तैयार हुआ ।1952 में देश प्रथम ,पहला आम चुनाव हुआ । कर्पूरी ठाकुर समस्तीपुर के ताजपुर निर्वाचन क्षेत्र से सोसलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार बने । पहले ही चुनाव में कर्पूरी ठाकुर का सिक्का चल गया । वह उन्होने अपने विरोधी उम्मीदवार को भारी मतों से हराया । 1952से लेकर 1988 तक बिहार की सिहासत में कर्पूरी ठाकुर के ईर्द -गिर्द धुम गया ।बिहार विधान सभा के सिहासन में कर्पूरी एक अजेय योद्धा थे । उन्हे विधान सभा का चुनाव कोई नहीं हरा पाया । जब 1967 के विधान सभा चुनाव के बाद डाँ लोहिया के अगुआई में बिहार में गैर काँग्रेस वाद का नारा परमान चढा । मुख्यमंत्री महामाया प्रसाद के अगुआई में संवित सरकार में उप - मुख्यमंत्री बनाये गये - कर्पूरी ठाकुर । उनके पास शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी दी । यहीं से शुरु हुई बदलाव की इब्बादत की ब्यार ।

कर्पूरी ठाकुर ने जो पहला फैसला लिया -वो था मैट्रीक की परीक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करना । डाँ लोहिया ने अंग्रेजी हटाओ का नारा दिया था । जिसे बिहार में लागू किया कर्पूरी ठाकुर ने । इस फैसले की बहुत आलोचना हुई ,विरोधियों ने कर्पूरी डिवीजन कहके मजाक उडाया लेकिन बाद में ऐतिहासिक फैसले की सराहना हुई । 22 दिसम्बर 1970 को पहली बार मुख्यमंत्री बने उनकी सरकार महज 163 दिन चली । लेकिन अपने फैसले से सरकार ऐतिहासिक रहीं ।

सरकार ने आठवीं तक की शिक्षा को मुफ्त कर दिया और 5 एकड तक की मालगुजारी को माफ कर दिया ।

बिहार में उर्दू को दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा दिया गया । इसके बाद बारी आई सम्पूर्ण क्रांति की आंदोलन की । 18 मार्च 1974 में बिहार छात्र आंदोलन की धुरी बन गया । लोक नायक जय प्रकाश नारायण के अगुआई में छात्रों ने केन्द्र सरकार के साथ -साथ व्यवस्था के खिलाफ भी विगुल फूँक दिया । इस आंदोलन में कर्पूरी ठाकुर ने सबसे बडे सिपेह सलाहकार

बने । 25 जून 1975 को पुरे देश में आपात काल लागू कर दिया गया । तमाम विरोधी जेल में डाल दिये गये । J.P को भी जेल में डाला गया लेकिन लाख कोशिश के बावजूद भी सरकार कर्पूरी को नहीं पकड पाया ।

पुलिस की नजरों से बचकर कर्पूरी ठाकुर आंदोलन में सक्रिय रहें ।उसके बाद आपात काल खत्म हुआ । इंदिरा गाँधी ने चुनाव की घोषणा की । 30 जनवरी 1977 के पटना के गाँधी मैदान में कर्पूरी ठाकुर ने जयप्रकाश नारायण की सभा में सरेन्डर किया । बिहार में जून महीने में चुनाव हुए और फिर से मुख्यमंत्री बने ।गरीबों के मसीहा कर्पूरी ठाकुर , इसके बाद तमाम विरोधियों को दर किनार करते हुए कर्पूरी ठाकुर ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया । 11 नवम्बर 1978 को अपना आरक्षण लागू कर दिया । बिहार में 3% महिलाओं के आरक्षण के साथ पिछडी जातियों के कुल 26% फीसदी आरक्षण दिया गया । देश में Sc,St के अलावा अपने आप में पहला आरक्षण था

विपक्ष ने मुखर विरोध किया । कर्पूरी ठाकुर पर व्यक्तिगत हमला भी किये गये

लेकिन गरीबों के तरफ से लडने वाले इस महारथी ने हार नहीं मानी । कर्फूरी ठाकुर के आरक्षण फार्मूले के 12वर्षो के बाद मंडल कमीशन की शर्ते आ ग ई ।मंडल कमीशन के जरीय देश में Obc को 27% आरक्षण मिला । 17 फरबरी 1988 सुबह 9 बजकर 15 मिनट कर्पूरी ठाकुर समस्तीपुर जाने की तैयारी कर रहे थे । तभी हाई -अटैक आया । अस्पताल ले जाते उन्हे रास्ते में दम तोड दिया ।

जननायक की मौत की खबर मिलते ही देश स्तब्ध रह गया । जिसने भी सुना सन्न रह गया । देश की सिहासत में खालीपन आ गया । कर्पूरी जी तो अपनी छाप छोडकर चले गये लेकिन पीछे छोड गये अपनी विरासत । जिस पर दाबा कर लालू प्रसाद गद्दी सम्भालते है तो कभी नितिश कुमार डंका बजाते है । लेकिन दर असल में करीशमा कर्पूरी का है ।जो बिहार की सिहासत में अभी भी बोल बोल रहा है ।

कर्पूरी ठाकुर अजीव राजनीति का धुरी बने रहे । सत्ता में रहे या विरोधी दल के नेता रहे उनके जाने के बाद भी सिहासत में उनका सिक्का आज तक चल रहा है ।

आर जे डी ,जदयू और बी जे पी तीनों पार्टीयाँ विरासत की दाबा करती है लेकिन क्या वाक ई में कर्पूरी ठाकुर के विरासत बिहार के बारे में सपने किसी ने साकार किया है ।

बिहार की सियासत की धुरी पहले आम चुनाव से लेकर 1988 तक कर्पूरी ठाकुर के इर्द-गिर्द धुमती रही ।न उनकी विरोधियों की कमी थी और न ही उनकी समर्थकों का कोई अभाव था ।लेकिन कर्पूरी की राजनीति का अपना एक तरीका था । वे सामाजिक न्याय के सिहासत करते थे ।लेकिन जाति सामंजस्य पर जोर देते थे । वे हर वर्ग की वकालत करते थे । वे इस बात पर जोड देते थे कि कैसे लोगों को मुख्यधारा से जोडा जाय ।जो सालों से सताये हुए है ।

हाँलाकि इतिहास में किन्तु परन्तु की कोई गुंजाईश नहीं होती । लेकिन सवाल है जो राजनीति जानने वालों के मन में अक्सर उठता है कि बिहार की सिहासत अगर कर्पूरी ठाकुर न होते तो क्या होता ।

क्या बिहार के सिहासत में पिछडे धुरी बन पाते ? क्या लालू प्रसाद यादव पिछडों के मसीहा बन पाते ? क्या लालू के बाद नितिश उनकी विरासत संभाल पाते? क्या मंडल की रिपोर्ट अस्तित्व में आती ? क्या एक बडी आबादी मुख्यधारा से जुड पाती ? क्या शिक्षा पर हर गरीब का अधिकार हो पाता ? जाहिर है ऐसे और क ई सवाल है जो कर्पूरी ठाकुर ने बिहार विकाश का जो सपना देखा था ।उनके मन में जो संसदीय राजनीति की जो तस्वीर थी ।क्या उनके सियासी की वारिशों ने सपने को पुरा किया । आज जो लोग कर्पूरी के राजनीति को आगे बढाने का दाबा करते है क्या वे लोग कर्पूरी के दिखाये रास्ते पर भी बिहार को आगे ले जाने में कामयाब रहें । सवाल इसलिए भी अहम है कि बिहार को लेकर सामाजिक न्याय की बात तो होती है लेकिन समग्र विकास की बात नहीं । ऐसे मे क्या बिहार के रहनुमाओं को कर्पूरी के असली वारिश कहना मुनासिव नहीं होगा ।क्योंकि बिहार में जो विकास विपक्ष में है

वो भी कर्पूरी के विरासत की दाबा करते है लेकिन क्या किसी ने वाजिव कोशिश की है । कर्पूरी के विरासत को आगे ले जाने के लिए कर्पूरी ठाकुर इमानदारी के मिशाल थे । पुरी जिन्दगी सियासत में गुजरने के बाद भी उनपर भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा । आज बिहार की विरासत की तमाम पार्टीयाँ कर्पूरी ठाकुर की विरासत पर दाबा करती है ।लेकिन क्या वाक ई में क्रपूरी के विरासत को उनके शिष्यों ने आगे बढाया है ।गौरी शंकर नागदराश ने कभी कर्पूरी ठाकुर के लिए कहा था - हिन्दूस्तान के करोडो शोषितों के हक के लिए लाखों निरीह नंगे बच्चों की कमीज और स्लेट के लिए आँखो में यंत्रणा का जंगल समेटे भटकती आदिवासी ,दलित महिलाओं की अस्मिता की रक्षा के लिए वेसहारा किसानों की कुदाल और जमीन के लिए ,फूँस के बूँढे मकानों पर उम्मीद की छप्पर के लिए हाँफती साँसों वाले हारे हुए लोगों की जीत के लिए गाँधी,लोहिया और अम्बेदकर के सफेद हो चुके सपनों को सतरंगा बनाने के लिए संघर्ष का नाम थे -कर्पूरी ठाकुर ।

कर्पूरी ठाकुर बिहार में एक बार उप- मुख्यमंत्री ,दोबार मुख्यमंत्री एवं दशकों तक विधायक विरोधी दल के नेता थे ।

सिहासत में इतना लम्बी सफर करने के बाद जब उनका देहांत हुआ तो परिवार का विरासत में देने के लिए उनके पास एक मकान तक नहीं था ।नहीं पटना में नहीं अपना पैतृक गाँव में । वे अपने नाम से एक इंच जमीन नहीं जोड पाये ।

संघर्षो का मिशाल इसी से समझा जा सकता है ।

वेदाग छब्बी के कर्पूरी ठाकुर आजादी से पहले दो बार और आजादी मिलने के बाद 18 बार जेल गये ।

आज राजनीति में भ्रष्टाचार की चर्चा चारो तरफ होती है ।ऐसे में बिहार के सियासी गलियारों में आज भी कर्पूरी की ईमानदारी की खिस्से सुने सुनाई जाते है

सम्पूर्ण भारत का समाज जननायक का ऋणी है ।

समाजवाद की प्रेरणा व अंत्योदय का लक्ष्य के साथ जन - जन की सेवा को समर्पित ।

उपेन्द्र प्रसाद